# मध्यप्रदेश के सांप

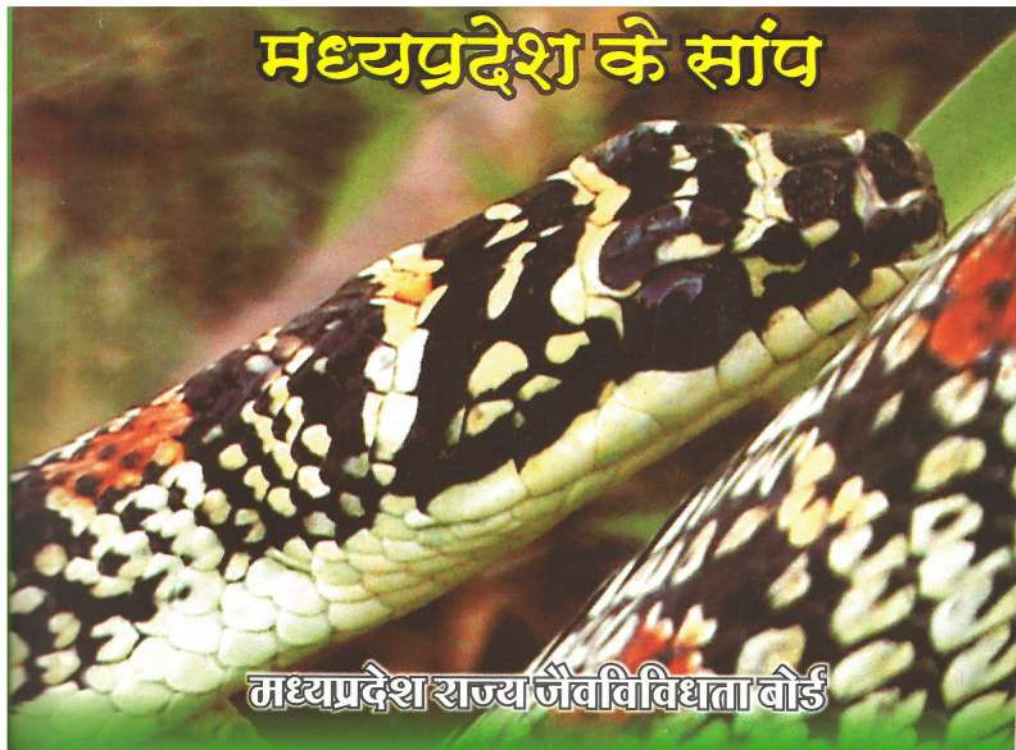

मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड

# मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड - एक परिचय

भारत सरकार के जैवविविधता अधिनियम 2003 के तहत मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड का गठन निगमित निकाय के रूप में किया गया है। बोर्ड का सरोकार प्रदेश की प्रचुर जैवविविधता के संरक्षण, उसके संवहनीय उपयोग और उससे होने वाले लाभों के समुचित बंटवारे से है। संक्षेप में बोर्ड के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं -

- ★ जैवविविधता के संरक्षण एवं उसके संवहनीय उपयोग से प्राप्त लाभों का स्थानीय समुदाय के बीच समुचित वितरण।
- ★ भारतीय नागरिकों को जैविक सम्पदा के सर्वेक्षण, उसके वाणिज्यिक उपयोग के लिये आये अनुरोध को मंजूरी देना या उन्हें नियंत्रित करना।
- ★ जैवविविधता के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन और शोध करवाना।
- ★ शासकीय निकायों, स्वैच्छिक संस्थाओं, छात्रों, युवाओं तथा स्थानीय निकायों सहित सभी संबंधित पक्षों से जैवविविधता संरक्षण हेतु तालमेल रखना।
- ★ जैवविविधता की जानकारी को संकलित करने के लिए लोक जैवविविधता पंजी तैयार करवाना, जिससे जैविक सम्पदा का उचित प्रबंधन किया जा सके तथा गांव के विकास की योजना बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान मिल सके।
- ★ स्थानीय निकाय के सदस्यों तथा स्वैच्छिक संस्थाओं के सदस्यों का प्रशिक्षण करना जिससे वे जैवविविधता संरक्षण तथा बोर्ड के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सार्थक भूमिका निभा सकें।
- ★ जैवविविधता संरक्षण से जुड़े मसलों पर राज्य शासन को सलाह देना।
- ★ जैवविविधता संरक्षण और उससे जुड़े मुद्दों पर चेतना जागृत करना और संबंधित जानकारियों का प्रचार-प्रसार करना।

# मध्यप्रदेश के सांप

लेखक- मुकेश इंगले

**मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड**
प्रथम तल किसान भवन
अरेरा हिल्स, भोपाल . 462011 (म.प्र.)
फोन : 0755–2554539, 2764911, 2554549
फैक्स : 91–755 – 2764912
ई–मेल – mp_biodiversityboard@yahoo.co.in

# मध्यप्रदेश के सांप

© मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड/ सरीसृप संरक्षण एवं शोध केन्द्र,उज्जैन

(सर्वाधिकार सुरक्षित, पुस्तक के किसी भी भाग को प्रतिलिपि बनाने, इलेक्ट्रानिक, मेकेनिकल, जैराक्स या रिकार्डिग अथवा किसी भी अन्य माध्यम द्वारा किसी भी प्रकार से किसी भी रुप में प्रसारित करने के लिए संबंधितों की पूर्वानुमति आवश्यक है )

**लेखक - © मुकेश इंगले**

प्रकाशक - मध्यप्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड, भोपाल

सरीसृप संरक्षण एवं शोध केन्द्र, ब्लाक नं. २०, वसंत विहार, सी-सेक्टर, उज्जैन

प्रथम संस्करण - २०११

रुपरेखा एवं सज्जा - **मुकेश इंगले**

डिजाइनिंग - प्रशांत देशपांडे, नितेश मालवीय

# अनुक्रम


- प्राक्कथन
- अपनी बात
- सांप संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी
- मध्यप्रदेश के सांपों की सूची (चेकलिस्ट)
- सांपों से जुड़ी भ्रान्तियाँ और उनका सच
- मध्यप्रदेश के विषहीन सांप
- मध्यप्रदेश के विषैले सांप
- सर्पदंश और प्राथमिक उपचार
- सांपों से सुरक्षा व उपचार
- सांपों का महत्त्व व संरक्षण

# प्राक्कथन

भौगोलिक संरचना की दृष्टि से भारत के पठार का उत्तरी-मध्य भाग मध्यप्रदेश कहलाता है । देश का यह हृदय प्रदेश नाना प्रकार की वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं की विविधता से सम्पन्न है । प्रदेश के उचित एवं दीर्घकालीन सुविकास हेतु प्राणी एवं पादप जैव विविधता को सहेजना, इसका संवर्धन करना अत्यंत आवश्यक है । प्रदेश के सामाजिक, आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों का अमूल्य योगदान है,परन्तु इस योगदान का आंकलन करना बेहद जटिल कार्य है क्योंकि इस संदर्भ में जानकारियों का अभाव लगातार बना हुआ है ।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए **मध्यप्रदेश जैव विविधता बोर्ड** द्वारा जैव विविधता एवं प्राकृतिक संसाधनों, धरोहरों से जुड़ी जानकारियों के दस्तावेजीकरण का कार्य प्रमुखता से किया जा रहा है । तकनीकि एवं वैज्ञानिकी स्तर पर जैव विविधता से जुड़ी तथ्यपरक जानकारियों को शीघ्र संकलित किए जाने की जरुरत है जो कि इनकी सुरक्षा, संरक्षण, संवर्धन, संवहनीय उपयोग, प्रबंधन आदि के लिए अत्यंत आवश्यक है । साथ ही, जैव

विविधता के विभिन्न पहलुओं पर जानकारियों को जन-जन तक पहुँचाना भी उतना ही आवश्यक है ताकि तत्संबंधी भ्रान्तियों और धारणाओं को बदला जा सके।

**सरीसृप संरक्षण एवं शोध केन्द्र, उज्जैन** द्वारा सरीसृपों के संरक्षण, शिक्षण एवं शोध कार्यों के दीर्घ अनुभव को ध्यान में रखते हुए मध्यप्रदेश जैव विविधता बोर्ड द्वारा **मध्यप्रदेश के सांप** पाकेटबुक तैयार करवाई गई। विश्वास है कि यह विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रकृति प्रेमियों और आमजन के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सदस्य सचिव
मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड

# अपनी बात

'सांप' को एक खतरनाक प्राणी माना जाता है और मानव को नुकसान पहुँचाने वाले जीवों में उनकी गिनती की जाती है। मेरे मत में, सांपों के प्रति हमारे मन में इस प्रकार की भावनाओं की प्रमुख वजह समाज में सांप संबंधी भ्रान्तियों और अंधविश्वासों का व्यापक प्रचलन है। सांप का अद्‌भुत रुप हमें सम्मोहित करता है, वहीं उसकी रहस्यमयी जीवनशैली व विष के भयंकर प्रभाव से हम भयभीत भी हो जाते हैं। इसी सम्मोहन और भय के वशीभूत होकर हमने सांपों को हमारे धार्मिक-पौराणिक ग्रंथों, पुरातात्विक, स्थापत्य सहित अन्य कलाओं व सांस्कृतिक परिवेश में आत्मसात किया हुआ है।

भारत वर्ष में सांपों का वर्णन सर्वप्रथम 'ऋग्वेद' में मिलता है, वहीं 'अथर्ववेद' में सांपों की व्यापक जानकारी के साथ-साथ सर्पदंश उपचार हेतु मंत्रों का भी उल्लेख है। आयुर्वेद के दो प्रमुख ग्रन्थों 'सुश्रुत संहिता' व 'चरक संहिता' में विषैले सांपों की पहचान, उनके विष की किस्मों, प्रभावों तथा उपचार पर विस्तृत सामग्री उपलब्ध है। भारतीय वाङ्मय व प्राचीन संस्कृत साहित्य में सांपों की कुल 414 प्रजातियों का वर्णन है। प्राणीशास्त्र के आधुनिक विद्वानों के अनुसार भारत की सीमा में सांपों की 330 प्रजतियाँ हो सकती हैं, वर्तमान में हमें सांपों की 276 किस्मों के बारे में आधिकारिक जानकारी उपलब्ध भी है।

भारतीय सांपों पर छोटी-बड़ी अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं जो मुख्यतः विषय विशेषज्ञों व शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी हैं। मध्यप्रदेश में सांपों-सरीसृपों का विधिवत सर्वेक्षण नहीं हो सका जिसके फलस्वरुप देश के हृदय प्रदेश के सांपों पर कोई स्वन्त्रत साहित्य अभी उपलब्ध नहीं है। मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड के सहयोग से इस कमी को दूर करने के लिए यह पाकेट बुक तैयार की गई है। इसमें मध्यप्रदेश में सांपों पर अब

तक प्रकाशित हुए शोध पत्रों, रिपोर्टों आदि को शामिल किया गया है । सरीसृप संरक्षण एवं शोध केन्द्र, उज्जैन द्वारा मालवांचल में किए गए विस्तृत सर्वेक्षण कार्य तथा भारतीय प्राणी सर्वेक्षण की मध्यभारत इकाई द्वारा सम्पन्न शोध कार्यों से इसमें विशेष सहायता ली गई है । सांप संबंधी जानकारी संक्षिप्त रूप में दी गई है, प्रायः उन्हीं पहचानों का उल्लेख किया गया है जिन्हें पढ़कर आमजन उस सांप के रंग, आकार, आवास आदि का ठीक-ठीक अनुमान कर सकें और उन्हें पहचानने में सुविधा हो । सांपों को पहचानने में कोई भ्रम न हो इस हेतु यथा संभव उनके रंगीन चित्र भी दिए गए हैं ।

पाकेटबुक का उद्देश्य जनसामान्य को मध्यप्रदेश में आमतौर पर मिलने वाले सांपों से परिचय कराना है। हांलाकि इसमें सांपों की सामान्य जानकारी, सर्पविष, सर्पदंश के लक्षण, प्राथमिक उपचार, सांपों से जुड़े अंधविश्वासों का सच, सांपों की वर्तमान दशा, सांपों का संरक्षण आदि को भी शामिल किया गया है ताकि यथा समय उनका भी लाभ लिया जा सके ।

पाकेट बुक में मध्यप्रदेश में पाए जाने वाले प्रमुख 24 प्रजाति के सांपों के बारे में प्रामाणिक जानकारी व विश्वस्त सामग्री दी गई है। विश्वास है, शिक्षकों, स्कूली विद्यार्थियों, ग्रामीण स्वास्थ्यरक्षकों, सांपों में रुचि रखने वालों व आमजन के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक में दिए गए अधिकांश चित्र हमारे निजी संग्रह से लिए गए हैं । साथ ही, डॉ.प्रत्युष पी. महापात्रा के सहयोग से प्राप्त चित्रों के लिए मैं उनका आभारी हूँ ।

सर्प अनुसंधान संगठन, उज्जैन से संलग्न विद्यार्थियों पवन वर्मा, अनिल सरसावन, विवेक पगारे तथा अन्य स्वयंसेवकों का सहयोग प्रशंसनीय है ।

मैं, मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड, भोपाल के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिनके वित्तीय सहयोग से

यह पाकेट बुक आप तक पहुँच सकी।

आशा है, प्रदेश में सांपों के संरक्षण व इस हेतु आवश्यक जनचेतना जाग्रत करने की दिशा में मेरे द्वारा निरन्तर किए जा रहे कार्यों की श्रृंखला में यह प्रयास विद्यार्थियों, शिक्षकों, ग्रामीण क्षेत्र के रहवासियों व आमजनों को उपयोगी महसूस होगा, साथ ही समाज में सांपों के प्रति ऐसा वातावरण निर्मित करने में सहायक होगा जिसमें बिना किसी पूर्वाग्रह के हम प्रकृति के इन अनूठे जीवों पर चर्चा कर सकेंगे।

सांपों-सरीसृपों पर विस्तृत साहित्य उपलब्ध है, नए शोध कार्य भी जारी हैं अतः किसी नई प्रजाति की खोज, नाम परिवर्तन अथवा व्यक्तिगत अनुभव की किसी रिपोर्ट का छूट जाना स्वाभाविक है। यदि ऐसी कमियों की ओर मेरा ध्यान आर्कषित करेंगे तो मुझे प्रसन्नता होगी, उनका साभार स्वागत करते हुए, मैं संभवतः पुस्तक के अगले संस्करण में उनके समाधान का अवश्य प्रयत्न करुंगा।

**- मुकेश इंगले**
निदेशक-
-सरीसृप संरक्षण एवं शोध केन्द्र, उज्जैन

# सांप संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी

सांप प्रकृति का एक अद्‌भुत जीव है । लगभग चौदह करोड़ साल पहले क्रिटेशियस काल के दौरान सांपों की उत्पत्ति हुई । सांप स्वतंत्र रुप से विकसित हुए अथवा उनका विकास छिपकलियों से हुआ, इस बात को लेकर वैज्ञानिकों के-अलग-अलग मत हैं । पृथ्वी पर सांपों की लगभग 3150 प्रजातियाँ पाई गई हैं जो उष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों से लेकर उत्तर ध्रुवीय वृत तक मिलती हैं । गहरे समुद्र में, ऊंचे-ऊंचे पेड़ों, पहाड़ों पर, जमीन पर, जमीन के नीचे सुरंगों में, तपते रेगिस्तान व दलदली इलाकों में, नदियों-तालाबों में आदि जगहों पर सांपों को देखा जा सकता है । सांप की शारीरिक संरचना रबर की नाजुक और लचीली बेलनाकार नली की तरह होती है जो लंबी-पतली और मोटी-भारी हो सकती है । इस नली में पसलियों से जुड़ी रीढ़ की लंबी हड्डी होती है जो कठोर मजबूत शल्कों से ढँकी होती है । सांप के पेट के शल्क चिकने, चमकदार और बड़े होते हैं जिससे उसे रेंगने में मदद मिलती है ।

सांपों को शायद रंगों की पहचान नहीं होती और वे

ज्यादा दूरी तक देख भी नहीं पाते, हांलाकि सांप अपने नथूनों से सूंघ सकते हैं, परन्तु इस काम के लिए वे अपनी संवेदनशील जीभ व जैकबसन अंगों की जुगलबंदी पर अधिक भरोसा करते हैं। सांप भूमि के माध्यम से आने वाले कंपनों के प्रति संवेदी होते है और हमारे गुजरने की आहट महसूस कर लेते हैं, परन्तु वे हमारी बातचीत और संगीत नहीं सुन सकते।

सांपों के पैर, कान व पलके नहीं होते। सांप के दोनों जबड़ों में अंदर की ओर मुड़े पतले दांत होते हैं जो शिकार को पकड़ने के काम आते हैं, खाने या चबाने के नहीं। सांप परभक्षी होते हैं और वे मेंढ़क, भेक, चूहे आदि का शिकार करते हैं। सांप वर्षा ऋतु के पूर्व जोड़ा बनाते हैं,

अधिकतर सांप अण्डे देते हैं जबकि कुछ जिंदा बच्चों को जन्म देते हैं। सांप असमतापी रक्त वाले प्राणी हैं और अपने शारीरिक क्रियाकलापों को गतिमान बनाए रखने के लिए उन्हें आसपास के पर्यावरण से गर्मी प्राप्त करनी होती है।

कुछ विषहीन सांप शिकार का दम घोटने के लिए कुण्डली का इस्तेमाल करते हैं, वहीं विषैले सांपों में शिकार को मारने के लिए इन्जेक्शन देने की अत्यंत उन्नत व कारगर प्रणाली होती है।

# Checklist of the Snakes of Madhya Pradesh

| | |
|---|---|
| **Family: Typhlopidae** | |
| Brahminy Worm Snake | *Ramphotyphlops braminus*(Daudin,1803 ) |
| Beaked Worm Snake | *Grypotyphlops acutus* (Dumerill, 1844) |
| Western Large Worm Snake | *Typhlops diardii* (Schlegel, 1839) |
| **Family: Uropeltidae** | |
| Ocellate Shield Tail Snake | *Uropeltis ocellata* (Beddome,1863) |
| **Family: Boidae** | |
| Red Sand Boa | *Eryx johnii* (Russell, 1801) |
| Common Sand Boa | *Gongylophis conicus* (Schneider, 1801) |
| Indian Rock Python | *Python molurus* (Linnaeus, 1758) |
| **Family : Colubridae** | |
| Common Vine Snake | *Ahaetulla nasuta* (Andersson, 1898 ) |
| Buff-striped Keelback | *Amphiesma stolatum* (Linnaeus, 1758) |
| Banded Racer | *Argyrogena fasciolata* (Shaw, 1802) |
| Foresten's Cat Snake | *Bioga foresteni* (Dum, Bib & Dumeril, 1854) |
| Common Indian Cat Snake | *Boiga trigonata* (Bechstein, 1802) |
| Ornate Flying Snake | *Chrysopelea ornata* (Shaw, 1802) |
| Indian Smooth Snake | *Coronella brachyura* (Gunther, 1866) |
| Common Trinket Snake | *Coelognathus helena* (Daudin, 1803) |
| Copper-headed Trinket Snake | *Coelognathus radiata* ( Schlegal, 1837) |
| Slender Racer | *Coluber gracilis* (Gunther, 1862) |
| Common Bronzeback Snake | *Dendrelaphis tristis* (Daudin, 1803) |

| | |
|---|---|
| Smooth water Snake | *Enhydris enhydris* (Schneider, 1799) |
| Common Wolf Snake | *Lycodon aulicus* (Linnaeus, 1758) |
| Barred Wolf Snake | *Lucodon striatus* (Shaw, 1802) |
| Travancore Wolf Snake | *Lycodon travancoricus* (Beddome, 1870) |
| Green Keelback | *Macropisthodon plumbicolor* (Cantor, 1839) |
| Banded Kukri Snake | *Oligodon arnensis* (Shaw, 1802) |
| Stout Sand Snake | *Psammophis longifrons* (Boulenger, 1890 ) |
| Indian Rat Snake | *Ptyas mucosa* (Linnaeus, 1758) |
| Cantor's Black-Headed Snake | *Sibynophis sagittarius* (Cantor,1839) |
| Black-Headed Snake | *Sibynophis subpunctatus* (Dum & Bib, 1854) |
| Checkered Keelback Water Snake | *Xenochrophis piscator* (Schneider, 1799) |
| **Family: Elapidae** | |
| Common Indian Krait | *Bungarus caeruleus* (Schneider, 1801) |
| Spectacled Cobra | *Naja naja* (Linnaeus, 1758) |
| **Family: Viperidae** | |
| Indian Saw-scaled Viper | *Echis carinatus* (Schneider, 1801) |
| Russell's Viper | *Daboia russelii* (Shaw & Nodder, 1797) |
| Bamboo Pit Viper | *Trimeresurus gramineus* (Shaw, 1802) |

## सांपों से जुड़ी भ्रान्तियाँ और उनका सच

पूरी दुनिया में संभवतः सांप ही एकमात्र जीव हैं जिनके बारे में असंख्य अंधविश्वास पनपे हैं, अतः सांपों से जुड़ी कुछ प्रमुख भ्रान्तियाँ और उनका सच जानना हितकारी होगा -

**क्या सांप दूध पीते हैं ?**

सांप दूध पीना पसंद नहीं करते क्योंकि यह उनका प्राकृतिक आहार नहीं है । सारे सांप मांसाहारी होते हैं, साथ ही सांप की जीभ चूसने के काम नहीं आती ।

**क्या मणीधारी सांप होते हैं ?**

किसी भी सांप के लिए अपने सिर पर मणी अथवा कोई चमकीला पत्थर रखना संभव नहीं होता क्योंकि उनकी त्वचा चिकनी और चमकीली होती है ।

**क्या सांप मनुष्य का पीछा कर उस पर हमला करते हैं ?**

सांप मनुष्यों और उनके जैसे बड़े जीवों से डरते हैं और मनुष्य की उपस्थिति भांपकर यथासंभव तुरंत दूर जाने अथवा बचने-छुपने का प्रयास करते हैं । हांलाकि सांपों को मारने, पकड़ने अथवा छूने का प्रयास करने पर सांप हमला कर सकते हैं ।

**क्या सांप बदला लेते है ?**

सांप मुख्यतः बदला लेने वाले जीव नहीं हैं, न ही उनकी बुद्धि इतनी विकसित है कि वे उन्हें मारने वाले व्यक्ति को पहचान सकें । किसी सांप को मारने पर वे अपनी कस्तूरी ग्रंथियों से कुछ रसायन छोड़ते हैं जो अन्य सांपों को उस ओर आर्कषित करता है जिसके आर्कषण में बंधकर कुछ सांप वहाँ इकट्ठा हो जाते हैं जिससे यह भ्रम पैदा होता है कि बदला लेने के लिए सांप एकत्रित हो गए हों।

**क्या सांप संगीत की धुन पर नाचते हैं ?**

सांप संगीत की धुन के साथ नहीं नाचते । केवल नाग ऐसा करते दिखते हैं जब वह बीन बजा रहे सपेरे के हाथ की हरकतें पकड़ने का प्रयास कर रहा होता है ।

**क्या दो मुंहा सांप होते हैं ?**

वास्तव में किसी सामान्य सांप के दो मुंह नहीं होते । लाल दो मुंहा सांप की पूंछ अन्य सांपों की तरह नुकीली न होकर सिरे से भोथरी व मोटी होती है, जो दूसरे मुंह का आभास देती है ।

Mukesh Ingle

# सामान्य अंधा सांप

अधिकतम लम्बाई 230 मि.मी.

**Common Worm Snake**

*Ramphotyphlops braminus*

**पहचान-** ये सांप छोटे होकर केंचुओं जैसे दिखते हैं। इनका रंग लाली लिए भूरा अथवा गहरा-भूरा होता है। जन्म के समय इनकी लंबाई 3 सेमी, औसत 12 सेमी तथा अधिकतम 18 सेमी होती है। इन भूमिगत निशाचर सांपों की आंखें व दुम छोटे और चिकने, चमकदार शल्क होते हैं।

**आवास -** ये लकड़ी के लट्ठों व नम पत्तियों के नीचे, दीमकों-चीटियों के बिलों में रहते हैं।

**आहार -** ये मुख्यत - चीटियों-दीमकों, उनके अण्डों, लार्वा-प्यूपा को खाते हैं,साथ ही छोटे कीड़ों-मकोड़ों का शिकार भी कर लेते हैं।

**वितरण -** सम्पूर्ण मध्यप्रदेश।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत इन्हें अनुसूची (चार) में संरक्षित किया गया है।

Mukesh Bagle

# चोंचदार अंधा सांप

**Beaked Worm Snake**

अधिकतम लम्बाई 600 मि. मी.

*Grypotyphlops acutus*

**पहचान -** ये सांप आकार में छोटे एवं केंचुए जैसे होते हैं। इसका सिर नुकीला न होकर गोलाकार होता है तथा आँखें मुश्किल से दिखाई देने वाले धब्बों के रुप में होकर शल्कों से ढंकी होती है। इनका रंग लाली लिये हुऐ भूरा अथवा गहरा-भूरा होता है, जो नीचे की सतह की ओर थोड़ा हल्का होता है। थुथून, गुदाद्वार के आसपास वाला भाग तथा पूंछ का अन्तिम सिरा बादामी या पीला होता है।

**आवास -** इन्हें जमीन के नीचे दीमकों एवं चीटियों की बाँबियों में रहना पसंद है। यह लकड़ी के मोटे लट्ठों, नम पत्तियों ईट - पत्थरों के ढेरों में भी पाए जाते हैं एवं इन्हें उलटने-पलटने पर ही दिखाई देते है।

**आहार -** मुलायम शरीर वाली इल्लियाँ, दीमकों-चीटियों के अण्डे तथा केंचुए इनके पसंदीदा शिकार हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश - बालाघाट, डिण्डोरी, होशंगाबाद, सिवनी, जबलपुर, झाबुआ, उज्जैन, देवास, इन्दौर, धार, मंदसौर एवं रतलाम जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत इन्हें अनुसूची (चार) में संरक्षित किया गया है।

Mukesh Ingle

# भारतीय अजगर

अधिकतम लम्बाई 7620 मि.मी.

**Indian Rock Python**

*Python molurus*

**पहचान** - ये बड़े आकार वाले, सुस्त सांप हैं जो पेड़ पर चढ़ने, पानी में तैरने तथा जमीन पर तेजी से रेंगने में सक्षम हैं। इनकी पीठ का रंग पीला-भूरा होता है जिस पर असमान गहरे - भूरे, काले किनारे वाले धब्बे होते हैं। इनका सिर गर्दन से कुछ चौड़ा व दुम एकदम छोटी होती है। सिर की ऊपरी सतह पर 'तीर' की नोक जैसा निशान बना होता है।

**आवास** - ये निशाचर सांप हैं जो चरागाहों, शुष्क झाड़ीदार वनों, नदी के मुहानों पर बने जंगली क्षेत्रों में मिलते हैं।

**आहार** - ये मुख्यतः गर्म खून वाले जानवरों, चूहे, पक्षी, सियार, बकरी, हिरण, जंगली सुअर आदि का शिकार करते हैं।

**वितरण** - मध्यप्रदेश - डिण्डोरी, जबलपुर, मण्डला, सिवनी, झाबुआ, उज्जैन, देवास, इन्दौर, धार और शिवपुरी जिलों में।

**संरक्षण** - मध्यप्रदेश में ये सांप कम मिलते हैं। वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत इन्हें अनुसूची (एक) में संरक्षित किया गया है।

Mukesh Ingle

Common Sand Boa

# माटी का सांप

अधिकतम लम्बाई 1000 मि.मी.

*Gongylophis conica*

**पहचान -** ये मोटे और भारी शरीर वाले सुस्त सांप हैं। इनकी दुम छोटी और खुरदरी होती है तथा नाक चौकोर। इनके रंगों में विविधता होती है, शरीर पर लाल-भूरे, भूरे-पीले- सफेद अथवा स्लेटी रंग के असमान आकार वाले धब्बों की श्रृंखला होती है व निचला हिस्सा बादामी होता है। आंखों से कनपटी तक दोनों और काले रंग की मोटी रेखा होती है।

**आवास -** ये हर प्रकार की भूमि में, रेतीले इलाकों में, आद्रतायुक्त हरे-भरे क्षेत्रों में, चूहे के बिलों में, ईंट के ढेरों में और चट्टानी क्षेत्रों में रहते हैं।

**आहार -** ये निशाचरी प्रवृत्ति वाले शक्तिशाली सांप घात लगाकर उभयचरों, सरीसृपों, कुतरने वाले छोटे जीवों व पक्षियों का शिकार करते हैं।

**वितरण -** सम्पूर्ण मध्यप्रदेश।

**संरक्षण -** इन्हें भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) की अनुसूची (चार) के तहत संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

# दो मुंहा सांप

Red Sand Boa

अधिकतम लम्बाई 1000 मि.मी.

*Eryx johnii*

**पहचान -** ये मजबूत, गठीले, भारी शरीर वाले सांप हैं जिनकी दुम बेहद भोथरी होती है दुम का सिरा नोकदार न होकर गोलाकार होता है जो सिर के समान दिखता है जिसके कारण इसे दोमुहां सांप समझा जाता है। ये सांप लाल-भूरा, गहरा-भूरा, काला,स्लेटी आदि रंगों का होता है। पेट भूरा-सफेद अथवा भूरा चित्तीदार होता है।

**आवास -** ये निशाचर प्रवृत्ति वाले सांप सूखे इलाकों और रेतीली जमीन को बेहद पसंद करते हैं और चूहों और घूस के बिलों में मिलते हैं।

**आहार -** ये अपने भोजन में चूहों और छोटे पक्षियों को शामिल करते हैं। इन्हें छोटे सांपों को खाते भी देखा गया है।

**वितरण -** मध्यप्रदेश - सिवनी, मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन, देवास, इन्दौर तथा धार जिलों में।

**संरक्षण -** इन्हें भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम की अनुसूची (चार) के तहत संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

अधिकतम लम्बाई 545 मि.मी.

# Indian Smooth Snake भारतीय चिकना सांप

*Coronella brachyura*

**पहचान बिंदु -** यह एक चिकने शल्कों वाला सांप है जिसकी आँखे बड़ी व गोले पुतली वाली होती है । सिर गर्दन से थोड़ा चौडा होता है जबकि थूथन नुकीला नहीं होता । पीठ का रंग हल्का-गहरा भूरा होता है तथा शरीर के अगले वाले भाग में उसी रंग के चौखाने वाली आकृति होती है ।

**आवास -** सूखे इलाकों में, पत्थरों के ढेर के नीचे ।

**आहार -** छोटी छिपकलियाँ ।

**वितरण -** मध्यप्रदेश के उज्जैन जिले में हाल ही में सांप का एक नमूना मिला है ।

**संरक्षण -** इन सांपों को भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के तहत अनुसूची (चार) में संरक्षित किया गया है ।

Mukesh Ingle

# हरा लता सांप

अधिकतम लम्बाई 2000 मि.मी.

**Green Vine Snake**

**Ahaetulla nasuta**

**पहचान -** ये लंबे और एकदम पतले सांप हैं जिनकी दुम बेहद लंबी होती है। इनका सिर लंबा व थूथन नोकदार होता है। मुँह के पिछले वाले हिस्से में लंबे दांत होते हैं जिनमें हल्का-सा विष होता है। आंखों की पुतलियाँ समानांतर अण्डाकार होती हैं। इनका रंग तोते के समान चमकदार हरा होता है,निचला हिस्सा पीला-हरा होता है व सिरों पर दोनों और सफेद-पीली चमकीली रेखा होती है।

**आवास -** ये वृक्षीय सांप मुख्यतः मैदानी और पहाड़ी क्षेत्रों में मिलते हैं तथा घांस के मैदानों और घनी कंटीली झाड़ियों वाले जंगलों में पाए जाते हैं।

**आहार -** ये मुख्यतः छिपकलियों का शिकार करते हैं, हालांकि पक्षियों और मेंढ़कों को भी अपने भोजन में शामिल करते हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश-सिवनी, उज्जैन, देवास तथा इन्दौर, जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) की अनुसूची (चार) के तहत इन्हें संरक्षित किया गया है।

Mukesh Ingle

# सीता की लट सांप

Buff-striped Keelback Snake

अधिकतम लम्बाई 800 मि.मी.

*Amphiesma stolatum*

**पहचान -** ये छोटे आकार के सांप हैं जिनका शरीर लंबा, आंखें बड़ी और गोल पुतली वाली होती हैं। इनका रंग स्लेटी, जैतूनी-हरा या गहरा-भूरा होता है तथा शरीर पर कत्थई, बादामी या पीले रंग की दो धारियां बनी होती हैं। सिर का रंग हल्का भूरा होता है जबकि इसके किनारे होंठ व ठोड़ी पीले रंग के होते हैं। पेट का रंग सफेद होता है जिस पर छितरे हुए काले धब्बे होते हैं।

**आवास -** ये खेत-खलिहानों, मैदानों, छोटी-छोटी झाड़ियों के आसपास, घांस के झुरमुट में मिलते हैं।

**आहार -** ये मुख्यतः मेंढ़क और भेक का शिकार करते हैं, हांलाकि इन्हें चूहे भी पसंद हैं। इसके अलावा ये घोंघे और छोटी छिपकलियां भी खाते हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश- डिण्डोरी, जबलपुर, सिवनी, मन्दसौर, रतलाम, झाबुआ, शाजापुर, उज्जैन, देवास, इन्दौर एवं धार जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) की अनुसूची (चार) के तहत इन्हें संरक्षित किया गया है।

Mukesh Ingle

Banded Racer

# दौड़ाक सांप

अधिकतम लम्बाई 1300 मि.मी.

*Argyrogena fasciolata*

**पहचान -** ये छोटे-मध्यम आकार के तेज गति वाले थलचर सांप हैं जो दिन में सक्रिय होते हैं। इनका सिर गर्दन से अधिक चौड़ा व नाक नुकीली होती है। इनका रंग भूरा, गहरा- भूरा, जैतूनी भूरा होता है। युवा सांपों के सिर पर चमकदार सफेद निशान होता है और शरीर पर सफेद रंग की चमकीली आड़ी पट्टियाँ होती हैं। पेट सफेद या पीला-सफेद होता है।

**आवास -** ये दिनचर सांप हैं जो चूहों के बिलों, चट्टानों के ढेरों, घनी झाड़ियों और घांस के मैदानों में मिलते हैं।

**आहार -** ये कीटों, मेंढ़कों, खेतों में रहने वाले घूस व चूहों को खाते हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश- ग्वालियर,जबलपुर,मण्डला,उज्जैन,इन्दौर,शाजापुर और देवास जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

P. Mahapatara

# बिल्ली सांप

**Common Cat Snake**

अधिकतम लम्बाई 1200 मि.मी.

*Boiga trigonata*

**पहचान** - ये छोटे-मध्यम आकार के लंबे-पतले शरीर वाले सांप हैं जिनकी दुम बेहद लंबी होती है। इनका सिर गर्दन से चौड़ा व आंखे बड़ी व खड़ी पुतलियों वाली होती हैं । इनकी पीठ भूरी, हल्की-भूरी होती है जिस पर गाढ़े रंग की टेढ़ी-मेढ़ी रेखांए बनी होती हैं । सिर के ऊपर **'Y'** आकार का निशान बना होता है । पेट सफेद या हल्का भूरा होता है जिस पर छोटे-काले निशान बने होते हैं ।

**आवास** - ये मुख्यतः निशाचर प्रवृत्ति वाले सांप हैं जो पेड़ की छाल के नीचे,पेड़ की कोटरों में, पत्थरों के नीचे, घनी कंटीली झाड़ियों में, घॉस-फूस की छतों में मिलते हैं ।

**आहार** - इनका मुख्य आहार छोटी-बड़ी छिपकलियाँ, छोटे पक्षी और स्तनपाई जीव हैं ।

**वितरण** - मध्यप्रदेश - सिवनी, उज्जैन, देवास , इन्दौर, शाजापुर एवम् धार जिलों में ।

**सरंक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है ।

Mukesh Ingle

Ornate Flying Snake

# उड़न सांप

अधिकतम लम्बाई 1800 मि.मी.

*Chrysopelea ornata*

**पहचान -** ये लंबे-पतले व चिकने शरीर वाले सांप हैं जिनका सिर लंबोतरा होता है तथा थूथन वर्गाकार। इनकी आंखें बड़ी व गोल पुतलियों वाली होती हैं तथा दुम बेहद लंबी। शरीर का रंग पीला, हरा-पीला अथवा मटमैला हरा होता है जिस पर काले रंग की आड़ी पट्टियां होती हैं। इन पट्टियों के बीच में नारंगी अथवा लाल रंग के आयताकार धब्बों की श्रृंखला बनी होती है। सिर का रंग काला होता है जिस पर पीले रंग की आड़ी पट्टियाँ व धब्बें होते हैं। पेट का रंग हल्का-हरा होता है।

**आवास -** ये दिनचर सांप मुख्यतः वृक्षवासी हैं, जो निचली झाड़ियों और बॉस के वृक्षों के झुरमुट में रहते हैं।

**आहार -** ये मुख्यतः छिपकलियों को खाते हैं। साथ ही मेंढ़कों, सरट और छोटे पक्षियों का भी शिकार कर लेते हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश : देवास जिला।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

# अलंकृत सांप

अधिकतम लम्बाई 1700 मि.मी.

**Common Trinket Snake**

*Coelognathus helena*

पहचान - ये मध्यम-बड़े आकार के दुबले- पतले शरीर वाले सांप हैं। इनका रंग भूरा, गहरा- भूरा या जैतूनी होता है। गर्दन पर दो काली धारियाँ तथा शरीर के अगले हिस्से में हल्की पट्टियाँ / चौखाने होते हैं। शरीर के पिछले हिस्से में दो गहरी-भूरी अथवा काले रंग की मोटी धारियाँ होती हैं जो दुम तक पहुंचती हैं। इनका पेट मोती जैसा सफेद होता है।

आवास - ये सांप रात-दिन सक्रिय रहते हैं। इनके पसंदीदा आवासों में दीमकों की बांबियाँ, चट्टानों की दरारें, घने पत्तीदार वृक्ष और झाड़ियाँ शामिल हैं।

आहार - ये मुख्यतः चूहों व गिलहरियों का शिकार करते हैं, साथ ही ये छोटी-बड़ी छिपकलियों, मेंढ़को व अन्य सांपों को खाते हैं।

वितरण - मध्यप्रदेश : जबलपुर, सिवनी, मन्दसौर, रतलाम, शाजापुर, उज्जैन, देवास, इन्दौर व धार जिलों में।

संरक्षण - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

# लाल धामन सांप

Common Bronzeback Tree Snake

अधिकतम लम्बाई 950 मि.मी.

*Dendrelaphis tristis*

**पहचान** - ये लंबे-पतले चिकने शरीर वाले सांप हैं जिनका सिर गर्दन से चौड़ा तथा दुम बेहद लंबी - पतली तारनुमा होती हैं इनकी आंखें बड़ी व गोल पुतलियों वाली होती हैं । इनका रंग कांसे के समान, भूरा, गहरा-भूरा अथवा बैंगनी होता है । शरीर के बगल में दोनों और एक-एक गाढ़ी भूरी या काली धारी होती हैं । पेट का रंग सफेद अथवा स्लेटी होता है ।

**आवास**- ये दिनचर सांप वृक्षवासी होते हैं । मध्यम आकार के कंटीले वृक्षों, निचली घनी झाड़ियों और खजूर के वृक्षों के झुरमुट में ये सांप रहना पसंद करते हैं और कभी कभार जमीन पर आते हैं।

**आहार** - ये मेंढ़क, सरट, छिपकली व छोटे पक्षियों का शिकार कर आहार पूर्ति करते हैं ।

**वितरण** - मध्यप्रदेश : डिण्डोरी, जबलपुर, सिवनी और उज्जैन जिलों में ।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है ।

Mukesh Ingle

# सामान्य भेड़िया सांप

**Common Wolf Snake**

अधिकतम लम्बाई 800 मि.मी.

*Lycodon aulicus*

**पहचान** - ये छोटे आकार के दुबले-पतले शरीर वाले सांप हैं जिनका सिर गर्दन से थोड़ा चौड़ा होता है । इनकी थूथन चौड़ी होकर निचले जबड़े से भी आगे निकली होती है तथा आंखें एकदम काली होती हैं । इनका रंग चमकदार- भूरा, गहरा भूरा, स्लेटी अथवा काला होता है पीठ पर सफेद अथवा पीले रंग की 10 - 20 पतली पट्टियाँ होती हैं जो अगल-बगल में जाकर बँट जाती हैं। अगले हिस्से में ये पट्टियाँ स्पष्ट दिखती हैं, जबकि पिछले में धुंधली होकर गायब होती जाती है ।

**आवास** - ये पूर्णतः निशाचर सांप हैं जो पेड़ की कोटरों, चट्टानों के ढ़ेरों, गुफाओं और उनके आसपास तथा अक्सर घरों में भी मिलते हैं ।

**आहार**- ये मुख्यतः छिपकलियों का शिकार करते हैं । कभी-कभी चूहे-चूहियाओं को भी खा लेते हैं।

**वितरण** - सम्पूर्ण मध्यप्रदेश ।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है ।

Mukesh Ingle

अधिकतम लम्बाई 900 मि.मी.

Green Keelback Water Snake

# पानी का हरा सांप

*Macropisthodon plumbicolor*

**पहचान -** ये छोटे-मध्यम आकार वाले सांप हैं जिसका शरीर तगड़ा होता है। इनका सिर छोटा व चौड़ा होता है और आंखें बड़ी व गोल पुतलियों वाली। इनका रंग चमकीला अथवा मटमैला हरा होता है तथा पेट स्लेटी या सफेद। युवा सांपों की गर्दन पर पीला निशान बना होता है, साथ ही आंख से लेकर मुंह के कोण तक दोनों ओर एक-एक काली धारी बनी होती है।

**आवास-** ये सांप संध्या व रात के समय सक्रिय होते हैं। ये मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्रों में रहते हैं, परन्तु पठारी इलाकों, हरे-भरे जंगलों, घांस के हरे मैदानों व निचली झाड़ियों, शहरों के बगीचों में भी दिख जाते हैं।

**आहार -** ये मुख्यतः भेको व मेंढकों को खाते हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश : सिवनी, उज्जैन, देवास, इन्दौर और शाजापुर जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है

Mukesh Ingle

Common Kukri Snake

# सामान्य कुकरी सांप

अधिकतम लम्बाई 700 मि.मी.

*Oligodon arnensis*

**पहचान** - ये छोटे आकार के सांप हैं जिनकी दुम की छोर नुकीली होती है। इनका रंग-भूरा, जैतूनी अथवा स्लेटी होता है, पीठ पर काले अथवा भूरे रंग की 10-12 मोटी धारियाँ होती हैं। सिर के अगले हिस्से पर '^ ' आकार का चिन्ह बना होता है। पेट का रंग चमकीला-सफेद होता है।

**आवास** - ये संध्या समय व रात को निकलने वाले सांप हैं जो मैदानी क्षेत्रों को पसंद करते हैं। ये सांप दीमक की बांबियों, पेड़ की कोटरों, चट्टानों की दरारों, गुफानुमा स्थानों, कंदराओं- दरीचों और निर्जन खण्डहरनुमा मकानों में देखे जा सकते हैं।

**आहार** - ये कीट-पतंगों, मकड़ियों, छिपकलियों, सरीसृपों के अण्डों, चूहों व छोटी गिलहरियों का शिकार करते हैं।

**वितरण** - मध्यप्रदेश - जबलपुर, उज्जैन, इन्दौर, देवास, धार, शाजापुर और शिवपुरी जिलों में

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

Stout Sand Snake

# स्थूलकाय फीता सांप

अधिकतम लम्बाई 1200 मि.मी.

*Psammophis longifrons*

**पहचान** - ये लंबे, स्थूलकाय शरीर वाले सांप हैं जिनका सिर लंबा होकर गर्दन से चौड़ा होता है। इनकी आंखें बड़ी व गोल पुतलियों वाली होती हैं और दुम लंबी। शरीर का रंग पीला, चमकीला-भूरा होता है तथा ऊपरी हिस्से के शल्कों के किनारे काले होते हैं। पेट का रंग सफेद, पीला -सफेद अथ्रवा स्लेटी होता है।

**रहवास** - ये दिनचर प्रवृत्ति वाले सांप हैं जो थलचर और वृक्षीय दोनों तरह के आवासों में पाए जाते हैं। उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट पर जंगलनुमा इलाके से एक सांप हाल ही में मिला है जो कंटीले झाड़ीनुमा वृक्षों पर विचरण कर रहा था।

**आहार** - इसकी आहार रुचि के बारे में हमें बहुत कम जानकारी है। ये मुख्यतः छिपकलियों को खाना पसंद करते हैं।

**वितरण** - मध्यप्रदेश - उज्जैन जिला।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची "चार" में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

# धामन

Common Rat Snake

अधिकतम लम्बाई 2650 मि.मी.

*Ptyas mucosa*

**पहचान** - ये मध्यम -बड़े आकार वाले धारारेखित सांप हैं जिनकी गर्दन पतली व आंखें बड़ी और गोल पुतलियों वाली होती हैं। सिर थोड़ा चपटा और गर्दन से थोड़ा चौड़ा होता है। इनके रंगों में काफी भिन्नता देखने को मिलती है। शरीर का रंग भूरा, हल्का-पीला, स्लेटी अथवा काला होता है, जिस पर हल्के अथवा गहरे काले निशान होते हैं। होठो के शल्कों पर अक्सर खड़ी काली लकीरें होती हैं तथा पेट पर काली पट्टियां बनी होती हैं।

**आवास** - ये दिनचर प्रवृत्ति वाले सांप बेहद सक्रिय और तेज तर्रार होते हैं जो जमीन और पेड़ पर समान रुप से रहने में सक्षम हैं। चूहे के बिल, दीमक की बांबी, धान के खेत, घांस के मैदान इनके प्रिय बसेरे हैं।

**आहार** - ये मुख्यतः मेंढक, भेक, सरट, छिपकली, पक्षी आदि का शिकार करते हैं।

**वितरण** - सम्पूर्ण मध्यप्रदेश।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (दो) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

Black Headed Snake

# काले सिर वाला सांप

अधिकतम लम्बाई 450 मि.मी.

*Sibynophis subpunctatus*

**पहचान -** ये छोटे आकार के दुबले-पतले शरीर वाले सांप हैं जिनका सिर गर्दन से थोड़ा चौड़ा होता है। इनका रंग चमकदार-भूरा होता है जिस पर रीढ़के साथ-साथ काले बिन्दुओं की शृंखला बनी होती है। शरीर के अगल-बगल वाला हिस्सा काले भूरे, स्लेटी रंग की रेखाओं अथवा धब्बों से बना होता है। सिर का रंग काला होता है जिस पर हल्के-पीले अथवा सफेद रंग के दो निशान बने होते हैं तथा गर्दन पर एक सफेद या मटमैला पट्टा बना होता है। पेट का रंग-हरा पीला होता है तथा पेट के प्रत्येक शल्कों में दोनों ओर एक-एक काली बिन्दी होती है।

**आवास -** दिन रात सक्रिय रहने वाले ये सांप थलचर हैं। ये नम पत्तों के मलबे में, पत्थरों के नीचे, नमीदार स्थानों में तथा लकड़ी के लट्ठों के नीचे मिल जाते हैं।

**आहार -** ये छोटी छिपकलियों, कोतरी और छोटे सांपों का शिकार करते हैं।

**वितरण -** मध्यप्रदेश- धार और उज्जैन जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

# पानी का सांप

Checkered Keelback Water Snake

अधिकतम लम्बाई 1750 मि.मी.

*Xenochrophis piscator*

**पहचान** - ये मध्यम आकार के भारी शरीर वाले सांप हैं जिनका सिर भोथरा होकर गर्दन से कुछ चौड़ा होता है। इनकी आँखें गोल पुतलियों वाली होती हैं, आंखों के नीचे तथा आंखों से लेकर मुंह के कोण तक दोनों और दो मोटी काली पट्टियां होती हैं। इनका रंग चमकदार जैतूनी-हरा, जैतूनी भूरा, पीला -भूरा, स्लेटी या काला होता है, पीठ पर चौखानेदार आकृति बनी होती है। पेट का रंग चमकीला अथवा मटमैला सफेद होता है।

**आवास** - रात-दिन दोनों में समान रुप से सक्रिय रहने वाले ये सांप पानी के स्रोतों (नदी,तालाब, झील, झरने) के आसपास, धान के खेतो में रहते हैं।

**आहार** - ये जलकीटों , टेडपोलों, मछलियों, मेंढ़कों, चूहों व पक्षियों का सेवन करते हैं।

**वितरण** - सम्पूर्ण मध्यप्रदेश।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (दो) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

मध्यप्रदेश के विषैले सांप

Common Krait

# सामान्य करैत

अधिकतम लम्बाई 1750 मि.मी.

*Bungarus caeruleus*

**पहचान** - ये सामान्य आकार के चिकने शल्क वाले सांप हैं जिनका सिर गर्दन से थोड़ा चौड़ा होता है। इनकी आंखें गोल पुतलियों वाली व एकदम काली होती हैं। इनका रंग चमकीला काला, भूरा, गहरा-भूरा, काला-नीला अथवा स्लेटी होता है। पीठ पर सफेद रंग की संकरी जोड़ीदार अथवा एकल पट्टियाँ दुम की नोक तक होती हैं। अक्सर ये पट्टियां शरीर के अगले भाग में नहीं होती , इनके स्थान पर मोटे सफेद धब्बे होते हैं। रीढ़ की हड्डी के समानान्तर षटकोणाकार शल्कों की कतार इनकी अच्छी पहचान है। पेट का रंग चमकीला सफेद अथवा पीलापन लिए होता है। दुम के नीचे के शल्क विभाजित नहीं होते हैं।

**आवास** - ये पक्के निशाचर सांप हैं जो रात के वक्त बेहद सक्रिय व फूर्तीले हो जाते हैं। ये पानी के स्त्रोतों के आसपास, दीमकों की बांबियों में, चूहों के बिलों में, ईंट- पत्थर के ढ़ेरो में रहते हैं।

**आहार** - ये सांप छोटे आकार के अन्य सांपों, चूहों, छिपकलियों और मेंढकों को खाते हैं।

**वितरण** - सम्पूर्ण मध्यप्रदेश।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Mukesh Ingle

Spectacled Cobra

# सामान्य नाग

अधिकतम लम्बाई 2200 मि.मी.

*Naja naja*

**पहचान -** ये चिकने, चमकदार शल्कों वाले सांप हैं, जिनका सिर चौड़ा होता है । इनका रंग काला, भूरा, स्लेटी या पीला होता है जिस पर अक्सर चित्तीदार अथवा पट्टेदार आकृति बनी होती है । इनके रंग, आकृति और फन पर बने निशानों में काफी भिन्नता होती है , कई मर्तबा फन पर स्पष्ट निशान भी नहीं होता ।

**आवास -** ये चूहों-दीमकों के बिलों, ईट-पत्थर-चट्टान के ढेरों, खेत-खलिहानों, मानवीय बस्तियों के आसपास पाये जाते हैं ।

**आहार -** ये मुख्यतः चूहे, मेंढ़क, चिड़िया खाते हैं । साथ ही गिलहरियों, अन्य सांपों को भी खा लेते हैं ।

**वितरण -** सम्पूर्ण मध्यप्रदेश ।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची दो (भाग दो) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है ।

Mukesh Ingle

Russell's Viper

# दीवड़ अथवा घोणस

अधिकतम लम्बाई 1800 मि.मी.

*Daboia russelii*

**पहचान** - ये मध्यम से बड़े आकार वाले सांप हैं जिनका शरीर मोटा-तगड़ा व शल्क खुरदरे होते हैं। इनका सिर गर्दन से चौड़ा व तिकोना होता है तथा ऊपरी शल्क छोटे, तीखे व उभरे हुए होते हैं। इनके नथूने बड़े होते हैं तथा खड़ी पुतली वाले आंखें होती हैं। इनकी दुम छोटी व पतली होती है। इनका रंग भूरा, पीला-भूरा होता है जिस पर गहरे अथवा काले रंग के गोल अथवा अण्डाकार छल्लों की तीन शृंखला बनी होती है। सिर पर संकरे हल्के सफेद निशान तथा गहरे भूरे रंग की तिकोनी एक जोड़ी आकृति होती है। आँख के पीछे व नीचे दो गहरे रंग की तिकोनी धारियां होती हैं तथा होठों के शल्कों पर भूरे रंग की चित्तियां होती हैं। पेट सफेद अथवा अर्धचन्द्राकार चित्तियों से भरा होता है।

**आवास** - ये सांप आमतौर पर निशाचर होते हैं जो घांस के खुले मैदानों, घनी झाड़ियों वाले जंगलों में व उनके किनारों पर, पथरीली पहाड़ियों में, घने कांटेदार बाड़ों में व खेत- खलिहानों में रहते हैं।

**आहार** - ये मूषकों, चूहों, छिपकलियों, बिच्छुओं को खाते हैं और कभी-कभी गिलहरियों और छोटे पक्षियों का शिकार भी कर लेते हैं।

**संरक्षण** - भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत अनुसूची (दो) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

Saw-scaled Viper

# फुर्सा अथवा छोटी दीवड़

अधिकतम लम्बाई 800 मि.मी.

*Echis carinatus*

**पहचान -** ये छोटे आकार के तगड़े शरीर वाले सांप हैं, जिनके शल्क तीखे, उभरे और खुरदरे होते हैं। इनका सिर गर्दन से चौड़ा, सिर के शल्क छोटे और खड़ी पुतली वाली बड़ी आंखें होती हैं। इनकी दुम एकदम छोटी व पतली होती है। इनका रंग हल्का-गहरा भूरा, ईंट जैसा लाल, स्लेटी अथवा रेत जैसा होता है जिस पर टेड़ी-मेड़ी आकृति बनी होती है। सिर पर 'तीर की नोक सा' निशान स्पष्ट दिखता है। पेट सफेद अथवा चित्तियों से भरा होता है।

**आवास -** ये मुख्यतः निशाचर सांप हैं जो मैदानों, पहाड़ियों, खुले-सूखे रेतीले इलाकों में मिलता है। चट्टानों की दरारों में, बाड़ों के पीछे और कांटेदार पौधों के तल में रहना पसंद करता है।

**वितरण -** मध्यप्रदेश - जबलपुर, सिवनी, धार, झाबुआ, उज्जैन और शाजापुर जिलों में।

**संरक्षण -** भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम (1972) के तहत अनुसूची (चार) में इन्हें संरक्षण प्रदान किया गया है।

# सर्पदंश और प्राथमिक उपचार

हमारे आसपास रहने वाले अधिकांश सांप विषहीन होते हैं जबकि, कुछ विषैले । खतरनाक विषधर तो केवल चार ही हैं जिन्हें 'बिग फोर' कहा जाता है । ये हैं - नाग, करैत, घोणस और फुर्सा । हमारी सघन जनसंख्या के कारण सर्पदंश की चिकित्सा एक आम समस्या बन चुकी है । भारत में हर साल लगभग पाँच लाख लोगों को सांप काट लेते हैं जिनमें से लगभग 50,000 लोगों की मौत हो जाती है ।

सांप बदला लेने के लिए कभी भी इंसान को नहीं काटते, सत्य तो यह है कि सांपों को छेड़ने, पकड़ने का प्रयास करने अथवा भूलवश उन पर पैर पड़ जाने पर यह दुर्घटना हो जाती है । विष सांपों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और वे कभी भी उसे गंवाना नहीं चाहते, साथ ही सांप हमला करने के पूर्व हमें पर्याप्त चेतावनी भी देते हैं जैसे - फुंककारना, फन उठा लेना, शरीर को फुला लेना या कुण्डली मारकर बैठ जाना इत्यादि ।

नाग अथवा कोबरा सांपों का मानवों से निरन्तर सम्पर्क बना रहता है क्योंकि हमारे घरों, बगीचों, खेत-खलिहानों अथवा उनके आसपास रहने वाले चूहों, मेढ़कों आदि जीवों का शिकार करने के लिए ये फुर्तीले सांप सदैव सक्रिय व उत्तेजित रहते हैं । करैत जैसे सांप भी चूहे-चूहियाओं अथवा अन्य छोटे सरीसृपों की खोज में हमारे घरों के ईदगिर्द डेरा डालते हैं और देर रात को घरों में घुस आते हैं । घोणस अथवा दीवड़ वैसे तो झाड़-झंखाड़ वाले इलाकों में निवास करते हैं, परन्तु चूहों का आर्कषण इन्हें भी हमारे करीब खींच लाता है, खासकर फसल की कटाई के वक्त, (सोयाबीन के खेतों पर काम कर रहे किसानों-मजदूरों के समीप) ।

नाग व करैत का विष 'न्यूरोटॉक्सिक' श्रेणी का होता है व मुख्यतः शरीर की तंत्रिका प्रणाली पर हमला करता है जिससे अंगघात अथवा लकवा हो जाता है ।

## नाग/करैत के काटने पर पैदा होने वाले लक्षण

- काटे गए स्थान पर दर्द व सूजन होना। (केवल नाग)
- पलकों का बंद होना, भारी आंखें व गर्दन कमजोर होना।
- नींद आना, जीभ व होंठ सूखना।
- सांस लेने, निगलने व बोलने में कठिनाई होना।
- पेट दर्द होना (केवल करैत)

घोणस/फुर्सा का विष 'हीमोटॉक्सिक' श्रेणी का होता है व मुख्यतः रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुँचाता है जिससे खून को बहने से रोकने वाली प्रणाली अस्त-व्यस्त हो जाती है।

## घोणस/फुर्सा के काटने पर पैदा होने वाले लक्षण

- काटे गए स्थान पर भयंकर दर्द व जलन होना।
- तीव्र सूजन आना।
- घाव से लगातार खून बहना।
- मुँह से खून बहना।

## प्राथमिक उपचार (सांप काट ले तो ये करें)

- रोगी को शांत रखें व उत्तेजना से बचाएं।
- शरीर को स्थिर रखें, खासकर उस भाग को जहाँ सांप ने काटा है।
- काटे गए अंग को चित्रानुसार बेण्डेज/कपड़े से बांधे, ताकि रक्त प्रवाह कम से कम हो सके
- पीडित को जल्दी से जल्दी अस्पताल अथवा नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र ले जाएं जहाँ प्रतिविष दवा का प्रबंध हो।
- संभव हो तो जिस सांप ने काटा है उसके तथा काटने पर उत्पन्न हुए लक्षणों के बारे में चिकित्सक को संकेत दें।

## ये ना करें

- तंत्र-मंत्र, झाड़फूंक में समय न गवाएँ।
- देशी-पारम्परिक-घरेलू इलाज के चक्कर में न पड़ें।
- सांप द्वारा काटे गए स्थान को न काटें, न छीलें और न ही मुँह से विष चूसने का प्रयास करें।
- पीड़ित को हर प्रकार के शारीरिक श्रम से बचाएं।

## सांपों से सुरक्षा के उपाय

### घरों में

- घरों व उनके आसपास की जगहों को साफ-सुथरा रखें।
- घरों की दीवारों से सटे छेद बंद करवाएँ।
- गमलों व पौधों को घरों की खिड़की -दरवाजों के आसपास न रखें।
- घरों में पानी की निकासी के स्थानों पर जालियाँ लगवाएँ।
- जमीन की बजाए चारपाई/पलंग पर सोएँ।
- कचरे के ढेर व खाद्य सामग्री को घरों के आसपास फैलने से रोकें।
- ईट,पत्थर, लकड़ी के ढेर घरों के आसपास न रहने दें।

## खेत खलिहानों में

- जमीन पर चलते समय रास्ते पर पूरी नजर रखें, साथ ही जूते अथवा लाठी से आवाज करते चलें।
- घांस काटते समय, निंदाई-गुड़ाई करते समय, घाँस के गठ्ठर को उठाते समय तथा फसल काटते समय सावधानी रखें।
- लकड़ियाँ एकत्रित करते समय, पेड़ के तने, पत्तियों के ढेर तथा घनी झाड़ियों के समीप काम करते समय सावधानी रखें।
- ऐसे स्थानों पर जहां आप देख नहीं सकते, अपने हाथ पैर कभी न डालें।
- शाम व रात्रि के वक्त चहल कदमी करते समय चुस्त व सावधान रहें।
- अंधेरे में टार्च/लालटेन का उपयोग अवश्य करें।
- हमेशा जूते पहनकर चलें।
- सांपों को छूने अथवा पकड़ने से बचें।

# सांपों का महत्त्व व संरक्षण

सांप प्रकृति जगत का एक अनूठा और शानदार जीव है । सांप का रस्सीनुमा शरीर, लहरदार चाल, लपलपाती जीभ, भयंकर फुंकार आदि मिलकर उसे एक डरावना-सा स्वरुप दे देते हैं, वहीं ये पता चलते ही कि इस जीव के पास विषरुपी एक खतरनाक रसायन भी मौजूद है, डर इस कदर बढ़ जाता है कि हम उसे सहज ही मारने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

हमारे कृषि प्रधान देश के ज्यादातर किसानों का विश्वास है कि बेहतर पैदावार के लिए उन्हें रासायनिक कीटनाशकों और खादों की जरुरत है, लेकिन वास्तव में सांप जैसे परभक्षी उनके लिए कहीं अधिक उपयोगी साबित हुए हैं । नाग और धामन के साथ कई अन्य सांप चूहों और अन्य कुतरने वाले जानवरों को खाने में माहिर हैं । चूहे-चूहियाएँ हमारे देश के खाद्यान्न का पांचवा हिस्सा चट कर जाते हैं । यदि हमारे दोस्त सांप नहीं होते तो यह नुकसान तीन गुना होता । अपने शरीराकार, गति, इन्द्रियों और बिलों में ठेठ भीतर तक घुस जाने की कला के चलते सांप 'सर्वाधिक प्रभावी प्राकृतिक चूहा नियंत्रक' के रुप में सामने आए हैं ।

सांप केवल आर्थिक महत्त्व के जीव नहीं हैं, सांपों में मौजूद विष के अनोखे गुणों के कारण उनका वैज्ञानिक महत्त्व भी बढ़ रहा है। सांप का विष ज्यादातर जीवनरक्षक प्रतिविष दवा बनाने के लिए, जैव रासायनिक शोध कार्यों में तथा अन्य चिकित्सीय उत्पादों के निर्माण में काम आता है ।

सांप हमारे पारिस्थितिकी-तंत्र की प्राकृतिक भोजन श्रृंखला के अत्यंत महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं । इस धरती पर जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों को साथ-साथ जोड़ने वाली श्रृंखला में सांप जैसे परभक्षी एक आवश्यक कड़ी के रूप में काम करते हैं । सांपों के खत्म हो जाने से यह कड़ी टूट जाएगी, फलस्वरुप आहार-श्रृंखला भंग हो

जाएगी जो पृथ्वी के पूरे जीवन को मुसीबत में डाल सकती है। अतएव पर्यावरण-तंत्र को संतुलित बनाए रखने के लिए सांपों की रक्षा करना उचित ही नहीं, आवश्यक भी है।

हमारे देश में जीव-जंतुओं को बचाने के लिए कई तरह के प्रयास किये जा रहे हैं, परन्तु अभी तक सांप पूरी तरह उपेक्षित हैं। रंग- बिरंगे पक्षियों और आकर्षक स्तनपायी प्राणियों को बचाने के लिए योजना पर योजनाएँ बनाई जा रही हैं, वहीं सांपों को बचाने और जनजागृति हेतु कोई योजना नहीं बनती, ऐसा क्यों ? सांपों के साथ इस तरह का सौतेला व्यवहार कतई उचित नहीं कहा जा सकता।

दरअसल, हमें ये स्वीकार करना चाहिए कि आमजन अभी भी सांपों के महत्त्व और पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका से अनजाने व अपरिचित हैं। चूंकि जटिल प्राकृतिक पर्यावरण को बचाये रखने में मामूली सांप का भी विशिष्ट महत्त्व व उपयोगिता है, अतः प्रकृति और उसके संतुलन में इन मूक प्राणियों की भूमिका को समझना एवं तद्नुसार उनकी सुरक्षा और संरक्षण के हर संभव प्रयास करना, हमारा दायित्व है, जिसे हमें निभाना ही होगा।

# पॉकेट बुक के बारे में

आपके हाथों में मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले सांपों पर प्रकाशित पहली पॉकेट बुक है। इसमें प्रदेश के विभिन्न इलाकों में पाये जाने वाले सांपों के रंगीन और आकर्षक छायाचित्र शामिल किये गये हैं जिससे उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। सांप की प्रत्येक प्रजाति की प्रमुख जानकारियों में पहचान, आकार, रंग, आवास, आहार, वितरण आदि सम्मिलित किए गये हैं।

साथ ही, सांपों के बारे में आम तथ्य, सर्पदंश व उसका प्राथमिक उपचार, सांपों से सुरक्षा के उपाय, सांपों से जुडी भ्रान्तियाँ और उनका सच, सांपों का महत्त्व तथा मध्यप्रदेश में पाये जाने वाले सम्पूर्ण सांपों की जाँच सूची भी दी गई है।

- विषहीन सांप
- मध्यम विषैले सांप
- विषैले सांप

# सरीसृप संरक्षण शोध केन्द्र, उज्जैन

सरीसृप संरक्षण एवं शोध केन्द्र, वन्य जीवों के संरक्षण तथा पर्यावरण शिक्षण के क्षेत्र में विगत एक दशक से सतत् रुप से सक्रिय है। केन्द्र द्वारा मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में शोध परियोजनाओं, प्रशिक्षण कार्यशालाओं, जनजागरण अभियानों सहित विभिन्न गतिविधियों का नियंत्र आयोजन किया जा रहा है।

# सांप हमारे दोस्त हैं और प्रकृति के अनुपम उपहार भी

## सांपों को मारिये नहीं, इन्हें बचाएं